अकादमिक-आयाम

2005–2006

बी.ए.–राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, प्राचीन इतिहास, भूगोल, अंग्रेजी, हिन्दी, अर्थशास्त्र
बी.एस–सी.–भौतिकी, गणित, रसायन, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान। **बी.काम.** पाठ्यक्रम

2010–2011

बी.एड. पाठ्यक्रम की एन.सी.टी.ई. से सम्बद्धता हेतु अनवरत प्रयास।
स्नातक स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत **रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास**
विज्ञान संकाय के अन्तर्गत **कम्प्यूटर, इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी** विषयों की अस्थाई सम्बद्धता।
स्नातकोत्तर स्तर पर **प्राचीन इतिहास एवं रसायनशास्त्र** विषय की अस्थाई सम्बद्धता।

2011–2012

बी.टी.सी. पाठ्यक्रम हेतु आवेदन। बी.एड. हेतु प्रयासरत।

2012–2013

स्नातकोत्तर स्तर पर प्राचीन इतिहास एवं रसायनशास्त्र की अस्थाई सम्बद्धता का विस्तरण।

2013 –2014

स्नातक स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत मनोविज्ञान, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन एवं इतिहास की स्थाई सम्बद्धता प्राप्त। कम्प्यूटर, इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी की अस्थाई सम्बद्धता का विस्तरण।

2014 –2015

बी.एड. पाठ्यक्रम हेतु अनापत्ति प्रमाण–पत्र प्राप्त। सम्बद्धता की कार्रवाई प्रारम्भ।

स्नातकोत्तर स्तर पर रसायनशास्त्र एवं प्राचीन इतिहास विषय की स्थाई सम्बद्धता प्राप्त।

स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर, सांख्यिकी, इलेक्ट्रानिक्स विषय की स्थाई सम्बद्धता प्राप्त।

2015–2016

बी.एड. पाठ्यक्रम प्रारम्भ।

स्नातकोत्तर स्तर पर **राजनीतिशास्त्र एवं एम.काम.** की अस्थाई सम्बद्धता, पाठ्यक्रम प्रारम्भ।

स्नातक स्तर पर **शिक्षाशास्त्र, गृह विज्ञान, संस्कृत** की अस्थाई सम्बद्धता, पाठ्यक्रम प्रारम्भ।

शोध एवं अध्ययन केन्द्र की स्थापना

महाविद्यालय में दो शोध एवं अध्ययन केन्द्र स्थापित हैं–

गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र – यह अध्ययन केन्द्र प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के साथ सम्बद्ध है।

दैनिक जागरण गोरखपुर, 22 जुलाई 2013

सिंधु घाटी से पहले थी सरस्वती नदी घाटी सभ्यता : प्रो. दीक्षित

संगोष्ठी मे उपस्थित शुबोध मिश्र प्रो शिवा जी सिहं व प्रो0 के0 एन0 दीक्षित।

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : भारत में प्रथमतः सभ्यता का उदय सिंधु नदी घाटी में नहीं अपितु सरस्वती नदी घाटी में हुआ था। यह बात पुरातात्विक सर्वेक्षणों से प्रमाणित हो चुकी है।

यह बात रविवार को भारतीय पुरातत्व संस्थान के निदेशक प्रो. केएन दीक्षित ने महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूषण में कही। गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केंद्र तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति के संयुक्त तत्वावधान में सरस्वती नदी की गोद में भारतीय सभ्यता का उदय विषय पर आयोजित व्याख्यान में प्रो. दीक्षित ने बताया कि सिंधु घाटी सभ्यता का काल जहां मार्शल ह्वीलर आदि ने 3000 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व बताया है। वहीं पुरातात्विक साक्ष्यों की कार्बन तिथि निर्धारण द्वारा सरस्वती नदी सभ्यता का काल 7500 ईसा पूर्व तक निर्धारित हो चुकी है। उन्होंने बताया कि 4500 ईसा पूर्व के बाद भारत में किसी भी जन के आगमन का कोई प्रमाण नहीं है। पुरातात्विक शोध यह बताते हैं कि सरस्वती नदी शिवालिक की पहाड़ी से निकलने वाली प्राकृतिक नदी थी। कालीबंगा, कुनाल,बनवाली भिराना, राखी गिरी फरमाना नाहर, सिसवाल बरार बालू आदि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त अवशेष सरस्वती नदी घाटी की सभ्यता का वास्तविक चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे पुरातत्ववेत्ता प्रो. शिवाजी सिंह ने कहा कि इतिहास एक विषय मात्र ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की पहचान भी होता है। व्याख्यान का संचालन सुबोध मिश्र ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डा.प्रदीप राव, डा. कुंवर बहादुर कौशिक, डा. बजरंग मिश्र,डा. रघुनाथ चंद, डा. दिग्विजय नाथ डा. मनीषा कपूर आदि जन मौजूद रहे।

शोध एवं अध्ययन केन्द्र

गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

9–10 अक्टूबर, 2012

सम्मिलित अतिथि

डॉ. नरेन्द्र कोहली, नई दिल्ली
प्रो. अमर सिंह, इलाहाबाद
प्रो. शिवाजी सिंह, नई दिल्ली
प्रो. यू.पी. सिंह, गोरखपुर
डॉ. विश्वनाथ मिश्र, वाराणसी
डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, कुशीनगर
डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, जौनपुर
प्रो. मुरली मनोहर पाठक, गोरखपुर
डॉ. रेखा चतुर्वेदी, गोरखपुर
प्रो. विपुला दूबे, गोरखपुर
डॉ. संतोष शुक्ला, नई दिल्ली
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, कानपुर
डॉ. बलवान सिंह, गोरखपुर

शोध एवं अध्ययन केन्द्र

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र – यह केन्द्र रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग से सम्बद्ध है। इस अध्ययन केन्द्र द्वारा भारत–नेपाल सम्बन्ध पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी करायी जा चुकी है।

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी- 14-15 फरवरी, 2015

21वीं शताब्दी में भारत–नेपाल सम्बन्ध

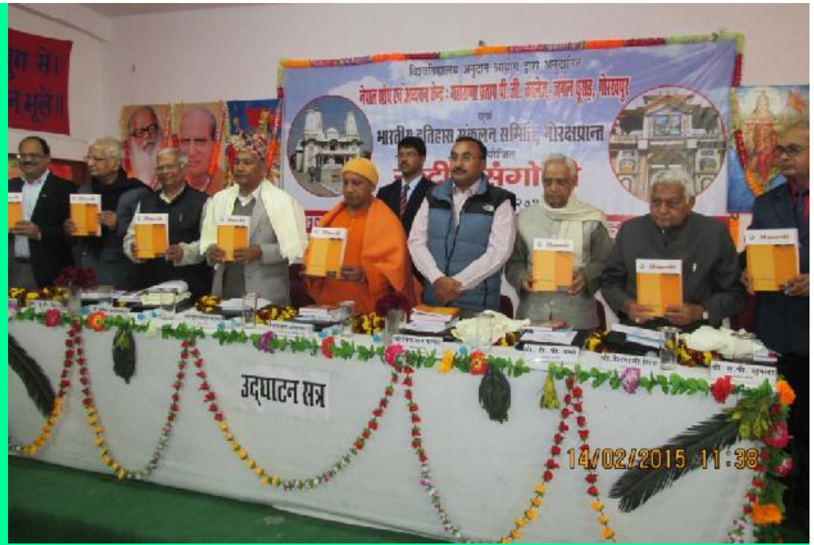

अतिथि

श्री खूम बहादुर खड़का (पूर्व गृहमंत्री नेपाल), **डॉ. देवेन्द्र राज कंडेल** (पूर्व गृह राज्यमंत्री, नेपाल), **प्रो. ए.पी. शुक्ला** (गोरखपुर), **प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल** (कुरूक्षेत्र), **प्रो. टी.पी. वर्मा** (वाराणसी), **प्रो. शिवाजी सिंह** (नई दिल्ली), **डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा** (गोरखपुर), **प्रो. महेश कुमार शरण** (गया), **डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय** (नई दिल्ली), **प्रो. हरिशरण** (गोरखपुर), **प्रो. ईश्वरण शरण विश्वकर्मा** (गोरखपुर), **डॉ. सुशील त्रिपाठी** (प्रतापगढ़), **प्रो. राजेन्द्र प्रसाद** (पूर्व कुलपति, गोरखपुर)

शिक्षकों के शैक्षिक उन्नयन के प्रयत्न

सत्र 2015–16 दायित्व : विभाग एवं उसके प्रभारी

विभाग	–	प्रभारी
1. प्रवेश एवं परीक्षा	–	डॉ. विजय कुमार चौधरी
2. प्रार्थना सभा	–	श्री सुबोध कुमार मिश्र
3. स्वच्छता	–	श्री विनय कुमार सिंह
4. अनुशासन	–	डॉ. आर.एन. सिंह
5. आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ	–	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव
6. नैक समन्वयक	–	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
7. प्रयोगशाला	–	डॉ. शिवकुमार वर्नवाल
8. पुस्तकालय	–	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी
9. क्रीड़ा एवं योग	–	श्री नन्दन शर्मा / श्री मंजेश्वर
10. व्याख्यान / संगोष्ठी / कार्याशाला	–	श्री अभिषेक वर्मा
11. सांस्कृतिक कार्यक्रम	–	श्रीमती कविता मन्ध्यान
12. छात्रसंघ / पुरातन छात्र परिषद्	–	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह
13. छात्रा प्रभारी	–	सुश्री मनीता सिंह / डॉ. आरती सिंह
14. छात्रवृत्ति एवं छात्र सहायता	–	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
15. कार्यालय	–	डॉ. राजेश शुक्ल
16. सूचना एवं जनसम्पर्क	–	श्री प्रकाश प्रियदर्शी
17. सूचना एवं परामर्श	–	डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र
18. शोध परियोजना एवं अध्ययन	–	डॉ. कृष्ण कुमार पाठक
19. संस्थागत सामाजिक दायित्व	–	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार
20. राष्ट्रीय सेवा योजना	–	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
21. प्रगति आख्या / पाठ्यक्रम योजना	–	डॉ. संजय कुमार तिवारी
22. सिलाई–कढ़ाई (प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम)	–	डॉ. शक्ति सिंह
23. कम्प्यूटर प्रशिक्षण (प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम)	–	श्री विरेन्द्र तिवारी
24. जीवन मूल्य (प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम)	–	डॉ. अपर्णा मिश्रा
25. हमारे महापुरूष (प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम)	–	डॉ. प्रदीप कुमार राव
26. ई.पी.एफ.	–	डॉ. सुभाष कुमार / डॉ. अरूण कुमार राव
27. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	–	श्री सुबोध कुमार मिश्र
28. शिक्षक अभिभावक समिति	–	डॉ. राम सहाय
29. अतिथि एवं जलपान	–	श्री प्रदीप वर्मा
30. बागवानी	–	सुश्री आम्रपाली वर्मा

कार्य विभाजन एवं दायित्व

महाविद्यालय की वार्षिक योजना बैठक में प्रतिवर्ष चक्रानुक्रम से कार्यों / दायित्वों का विभाजन होता है। शिक्षक अपने कार्य / दायित्त्व / विभाग का 'प्राचार्य' होता है। वह मर्यादा–नियम और संस्था हित की सीमा में निर्णय लेने हेतु स्वतन्त्र होता है।

शिक्षकों को पुस्तक क्रय की सुविधा

सभी शिक्षक को यह अधिकार प्राप्त है कि वह देश में कहीं भी जाए यदि कोई पुस्तक उन्हें अपने लिए अथवा पुस्तकालय के लिए महत्त्वपूर्ण लगती है तो **‘क्रय’ कर ले** वापस लौटकर पुस्तकालय में नियमानुसार दर्ज करा दें, उसका भुगतान महाविद्यालय से प्रबन्धक महोदय द्वारा हो जाता है। पुस्तक क्रय करने की यह सीमा **लगभग 10,000 रू.** तक का है।

प्रोजक्टर युक्त कक्षाध्यापन

शिक्षक कम्प्यूटर–इन्टरनेट इत्यादि अत्याधुनिक ज्ञान–विज्ञान की दुनिया में भी विचरण कर सके, इस दृष्टि से सत्र 2013–14 से प्रत्येक शिक्षक को प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम 5 व्याख्यान प्रोजेक्टर पर देना अनिवार्य किया गया। सत्र 2014–15 में इसे बढ़ाकर 10 व्याख्यान कर दिया गया।

इन्टरनेट सुविधा

शिक्षकों के उपयोग के लिए अलग से पुस्तकालय में **कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट** की सुविधा प्रदान की गई है। **कम्प्यूटर साइंस की प्रयोगशाला** में भी दो कम्प्यूटर पर इन्टरनेट की सुविधा का लाभ शिक्षक ले सकता है।

कम्प्यूटर–इन्टरनेट प्रयोग हेतु शिक्षकों की सहायता के लिए कम्प्यूटर साइंस के दोनों शिक्षक, प्रयोगशाला सहायक एवं कम्प्यूटर सेल प्रभारी को स्पष्ट निर्देश है।

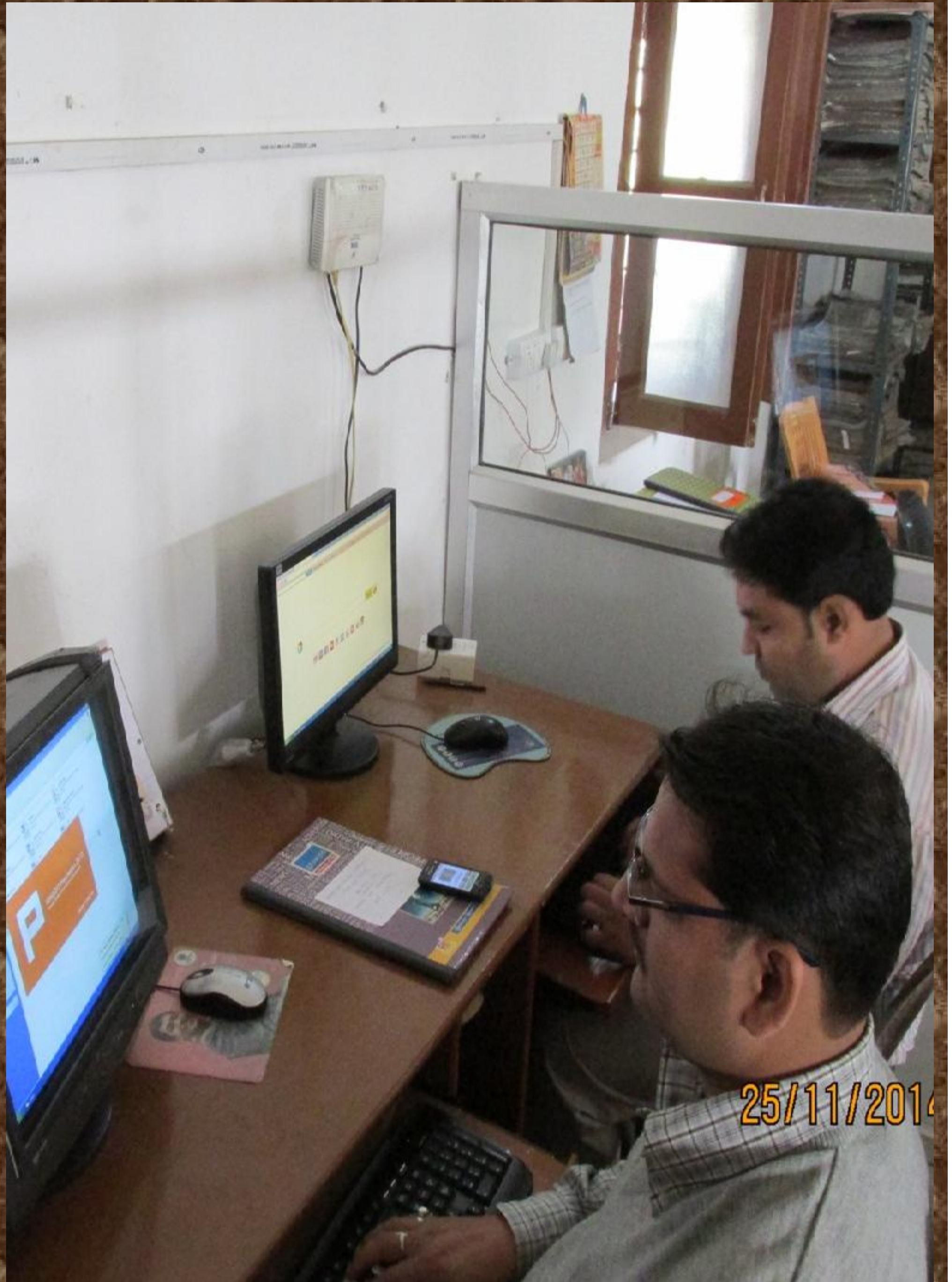

व्याख्यान सारांश

प्रत्येक व्याख्यान का सारांश बनाना एवं कक्षा में व्याख्यान से पूर्व छात्र–छात्राओं को उपलब्ध कराना अनिवार्य है। यह विधि शिक्षकों में अध्ययन एवं विषय ज्ञान को अद्यतन बनाये रखने हेतु अपनायी गई है।

शिक्षक-प्रतिपुष्टि प्रपत्र

महाविद्यालय में शिक्षक के व्यक्तित्त्व विकास का यह सर्वाधिक प्रभावी माध्यम बना है। 2007 ई. से ही वर्ष में दो बार शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र (प्रोफार्मा) के माध्यम से शिक्षक के सन्दर्भ में विद्यार्थी अपने मन की बात प्रस्तुत करता है। अध्ययन–अध्यापन से लेकर आचार–विचार तक पर छात्र–छात्राओं का मत माँगा जाता है। शिक्षक अपने बारे में विद्यार्थियों का मत जानता है और तद्नुसार अपना मूल्यांकन करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र

क्रमांक..................... *दिनांक..................*

आग्रह - 1. प्रस्तुत शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र भराने का उद्देश्य निम्न है -

(क) शिक्षकों में आत्मावलोकन एवं आत्म चिंतन की प्रक्रिया को बढ़ावा देना।

(ख) शिक्षकों के व्यक्तित्व में सुधार की प्रक्रिया में सहयोग करना।

(ग) महाविद्यालय में पठन-पाठन में निरन्तर सुधार एवं परिसर संस्कृति का विकास करना।

2. इस प्रपत्र को आप पूरी गम्भीरता से सही-सही भरें आपकी कोई भी गलत सूचना से महाविद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

शिक्षक का नाम.. संकेतांक ☐

कक्षा.. विषय..

- सम्बन्धित शिक्षक द्वारा पढ़ाया हुआ विषय समझ में आता है। **हाँ** ☐ **नहीं** ☐ **थोड़ा बहुत** ☐
- पढ़ाने की शैली कैसी लगती है ? **बहुत अच्छा** **अच्छा** ☐ **अच्छा नहीं** ☐
- आपके प्रति सम्बन्धित शिक्षक का व्यवहार कैसा है ? **सामान्य** ☐ **आत्मीय** ☐
  या अन्य किसी प्रकार का..
- कक्षा के अतिरिक्त महाविद्यालय परिसर में उनका व्यवहार कैसा लगता है? **अभिभावक जैसा** ☐ **प्रशासक जैसा** ☐ **या किसी से कोई मतलब नहीं** ☐
- सम्बन्धित शिक्षक के व्यवहार का यरि कोई पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है **तो क्या**..................
  ....
- सम्बन्धित शिक्षक के व्यवहार का यरि कोई पक्ष आपको बुरा लगता है **तो क्या**..................
  ....
- सम्बन्धित शिक्षक का अपना विषय ज्ञान कैसा है ? बहुत अच्छा ☐ सामान्य ☐ कम ☐
- कक्षाध्ययन में सुधार हेतु आपका सुझाव..
  ....
- महाविद्यालय परिसर को और अच्छा बनाने एवं शिक्षण पद्धति में गुणवत्ता हेतु आपको सुझाव..................
  ....
- आपको यदि कुछ और कहना है..
  ....